पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

दैहिक स्वतंत्रता की मांग करती 'मित्रो'

सुरजालेखा ब्रह्म
पीएच.डी. शोधार्थी
हिंदी विभाग,सिक्किम विश्वविद्यालय
ईमेल : surjalekha143@gmail.com

शोध सार : स्वातंत्रोत्तर कालीन महिला लेखिकाओं में 'कृष्णा सोबती' सर्वोत्तम स्थान पर हैं। हिन्दी साहित्य में स्त्री की स्थिति और उसमें आए परिवर्तनों पर बहुत कुछ लिखा गया है। उनमें स्त्री चेतना का प्रखर स्वर मिलता है इसलिए उन्हें 'बोल्ड लेखिका' का खिताब मिला है उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी पात्रों का चित्रण अप्रतिम ढंग से किया है। समाज में नारी की स्थिति एवं उसके संघर्षमय जीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण कर इन्होंने नवीन मूल्यों की स्थापना की हैं। उनकी नारी पात्र डरी या सहमी हुई नहीं रहती बल्कि वह परिस्थितिवश आनेवाले संकटों का मुक़ाबला करने को तत्पर रहती है। सोबती का सम्पूर्ण लेखन नारी स्वतंत्रता पर केन्द्रित है। उनके कथा साहित्य में नारी मुख्य पात्र है। उनकी हिम्मत एवं जूझने की अदम्य शक्ति की हमें दाद देनी पड़ेगी,उन्होंने बिना किसी झिझक के तमाम स्त्री पात्रों को बहुत ही बेबाक चित्रित किया है।

बीज शब्द : समाज, शोषण, स्वतंत्रता, स्त्री, पुरुषसत्ता, अधिकार, यौन, काम आदि।

मूल आलेख

'मित्रो', 'कृष्णा सोबती' के उपन्यास 'मित्रो मरजानी' की प्रमुख नायिका है। जो सन् 1968 में प्रकाशित पंजाब की पृष्टभूमि पर आधारित उपन्यास है। जहां संयुक्त परिवार का ताना-बाना बुनते हुए स्त्री के प्रति सामाजिक मानसिकताओं को दर्शाने का प्रयास हुआ है। एक संयुक्त परिवार उस परिवार का मुखिया है- गुरुदास और उनकी पत्नी धनवंती। गुरुदास के तीन पुत्र हैं- बनवारीलाल, सरदारीलाल और तीसरा गुलजारीलाल, उनकी एक बेटी भी है 'जनको' जिसका विवाह हो चुका है। तीनों पुत्र का भी विवाह हो चुका है। बड़े बेटे बनवारी की पत्नी 'सुहागवंती', छोटे गुलजारी लाल की पत्नी 'फुलावंती' और मझले बेटे सरदारीलाल की पत्नी 'सुमित्रावंती' उर्फ 'मित्रो'। सुहागवंती समझदार, अच्छे-बुरे का ख्याल रखती है, सास-ससुर की सेवा करती है। छोटी बहू फूला अपना पेट भरने के अलावा किसी के बारे में नहीं सोचती है। वहीं मझली बहू 'मित्रो' उपन्यास की नायिका है जिसके इर्द-गिर्द ही सारी कथा चक्कर काटती है। 'मित्रो' एक ऐसी स्त्री है जिसमें प्यार, करुणा, स्नेह के साथ-साथ अविरल काम वासना है। सोबती स्वयं 'मित्रो' को परिभाषित करती हुई कहती हैं "मित्रो व्यक्ति की जिस छटपटाहट का प्रतीक है वह यौन उफान ही नहीं, व्यक्ति की अस्मिता का भी अक्स है जिसे नारी की पारिवारिक महिमा में भूला दिया जाता है। मित्रो को लिखने से पहले कुछ मालूम नहीं था कि वह किस तस्वीर की निगेटिवे थी या निगेटिवे से कौन सा चेहरा उभर आयेगा।"[1] (बासमेह डॉ. शहनाज जाफ़र,कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ)

संसार में मानव को जीवन यापन के लिए अनेक साधन की आवश्यकता होती है जिसमें 'यौन' भी महत्वपूर्ण है। कई मनोवैज्ञानिकों ने इसे एक भूख बताया है। जैसे भूख लगने पर भोजन और प्यास लगने पर पानी की आवश्यकता पड़ती है, ठीक उसी प्रकार देह तृप्ति के लिए यौन संतुष्टि भी आवश्यक है। भारतीय समाज में 'यौन' जैसे शब्द को अपवित्र माना जाता है। यहाँ स्त्री के बारे में यौन संबंध पुरुषों से अलग मानी जाती है। पुरुष चाहे किसी भी स्त्री के साथ यौन संबंध बना ले उसपर कोई दाग नहीं लगता पर यही कार्य स्त्री कर ले तो समाज

उस पर तरह-तरह के लांछन लगाता है। 'मनोविश्लेषणवाद' के प्रवर्तक 'सिगमंड फ्रायड' ने मानव मन का वैज्ञानिक विश्लेषण सिद्धांत प्रस्तुत करते हुए कामशक्ति (लिबिडो) की महत्वपूर्ण भूमिका बताई है। 'फ्रायड' मनुष्य की कई समस्याओं का मूल कारण अतृप्त कामवासना को मानते हैं तो वहीं 'डॉ. गणेश' के अनुसार "सेक्स जीवन का सबसे जघन्य किन्तु सबसे पवित्र सत्य है। अनादिकाल से मनुष्य की आंतरिक तथा बाह्य प्रवृतियों को रूप देती आनेवाली काम वासना सृजन की मूल प्रेरणा है तो मनुष्य को पशुता से ऊपर उठाने की बाधा देनेवाली सबसे बड़ी शक्ति है।"[2] (राठोड डॉ. शंकर ए., कृष्णा सोबती: व्यक्तित्व एवं कृतित्व) नारी स्वतंत्रता की एक मूल समस्या आज दैहिक स्वतंत्रता बनी हुई है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से लैस स्त्रियों की सोच और मानसिकता में बदलाव आया है। आज की नारी सती प्रथा से लेकर नौकरी करने तक ही नहीं बल्कि हर तरह से मुक्त होना चाहती है। वर्षों से स्त्री को दबोचा-कुचला जा रहा है फिर चाहे घर से बाहर निकलने की हो, सुख-दुःख की हो या यौन संबंध उसकी इच्छा-अनिच्छा का कोई ख्याल नहीं रहता। लेकिन'कृष्णा सोबती' ने 'मित्रो' के चरित्र के मध्यम से यौन सम्बन्धी मानसिकता में नई दृष्टि भरने का प्रयास किया है।

'मित्रो' एक ऐसी नारी है जो अपने पति के नपुंसक होने के कारण कामवासना से अतृप्त रहती है। मनुष्य अपनी चाहत को पूरा करने के लिए कुछ भी कर सकता है यह तो संसार का शाश्वत नियम है। प्रत्येक मनुष्य में इच्छाएँ होती हैं। मित्रो भी उसी प्रकार की नारी है कभी शीतल तो कभी बदमिजाज। 'मित्रो' की परिभाषा देते हुए 'डॉ. भगवानदास वर्मा' लिखते हैं "कृष्णा सोबती की मित्रो एक ऐसी नारी है जो पारंपरिक नैतिकता बोध के सारे विश्वासों से मुक्त है, केवल हाड़ माँस की बनी उन्मुक्त नारी। मित्रो के रूप में एक ऐसी नारी की प्राकृतिक वासना सारे अहम और सुपर अहम् के गिलाओं को फाड़कर बहे आ रही है फिर भी मित्रो वासना की सरिता नहीं है उसमें सुसंस्कृत नारी जैसा स्नेह, ममता आदि मानवीय गुण है। लगता है प्रत्येक नारी के हृदय में कही दूर मित्रो बैठी हुई है।"[3] (**बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य**) अर्थात 'मित्रो' में समझदारी और स्नेह के अलावा अपनी अधिकार

के प्रति सजगता भी है। अतृप्त काम मनुष्य को बेचैन, अस्थिर एवं क्रोधित बना देता है जिसका जीता जागता उदाहरण 'मित्रो' है। मित्रो का अपनी जेठानी 'सुहागवंती' के समक्ष खटिया पर बिना सलवार, कुर्ते पहने लेटी रहना उसके अतृप्त यौन इच्छाओं का परिचय देता है और उसके इस हरकत का जवाब देती हुई,जेठानी कहती है "घर-घर तेरी जैसी काली मकाली औरतें हैं। उनके भी तुझ जैसे ही दो-दो हाथ हैं, पाँव हैं, आँखें है और यहीं तुझ जैसी दो छातियाँ ! क्या तू ही अनोखी इस जून पड़ी है।"[4] (**बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य**) एक तो 'मित्रो' का पति 'सरदारीलाल' उसकी अतृप्त भावना को तृप्त नहीं कर पाता साथ ही हर रोज उसके साथ मारपीट, झगड़ा करता है। सरदारीलाल हमेशा 'मित्रो' को नज़र नीचे करने को कहता है, "सुना नहीं ! एक और जमाकर कहा नज़र नीची करती है कि नहीं।"[5] (**बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य)** 'मित्रो' अपनी व्यथा को व्यक्त करती हुई भी कहती है, "जेठानी तुम्हारे देवर सा बकलोल कोई और दूजा न होगा। न दुःख-सुख, न प्रीति-प्यार, न जलन-प्यास...बस आय दिन ढ़ोल धप्पा...लानत मलानत"[6] **(बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य)** अतः 'मित्रो' एक अतृप्त काम वासना को लेकर जीती है। जिसकी पूर्ति पति द्वारा न होने पर वह अन्य पुरुष से भी संबंध बनाना चाहती है लेकिन वहाँ वह गलत ठहराई जाती है। वह कटघरे में खड़ी कर दी जाती है मगर वहाँ भी वह निडर होकर जाने से मना करती है "इससे क्या डरती हूँ, जब तक मित्रो के पास यह इलाही ताकत है, मित्रो मरती नहीं। भले बुलाएँ बापू भी मैं क्या किसी से डरती हूँ। ?"[7] **(बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य)**यह एक स्त्री का संघर्ष है कि स्त्रियों को पुरुषों की इच्छा-अनिच्छा का ख्याल रखना पड़ता है तो पुरुष क्यों नहीं रख सकता ?यह केवल मित्रो की ही नहीं बल्कि कई और ऐसी स्त्रियाँ है जो अपने पति से अतृप्त होने की बात करती हैं, वह अन्य कई बहुओं की तरह घूँघट की चिंता नहीं करती। जिस कारण वह परिवारवालों के साथ सामंजस्य नहीं बना पाती। कभी अपने ननद जनको से काम सम्बन्धों की बात करती है तो कभी जेठानी 'सुहागवंती' से दुर्व्यवहार तो वहीं जेठ

'बनवारीलाल' को तिरछे नज़रों से छेड़ते हुए कहना, "जेठ जी अपनी जिठानी के तूल तो मैं कहाँ पर एक नज़र इधर भी।"[8] (**बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य)**अतः मित्रो पहली ऐसी नारी है जो अपनी अतृप्त कामवासना को निसंकोच होकर बताती है। समाज जिसे अधर्म और अपवित्र मानता है मित्रो उसे अस्वीकार करती है। बात-बात में यौन शब्दों के उच्चारण करने और अपनी देह को प्रदर्शित करने में उसे कोई शर्म नहीं आती। अपने शरीर को प्रदर्शित करती हुई वह कहती है, "सच कहना, जिठानी सुहागवंती, क्या ऐसी छातियाँ किसी और की भी है?"[9](**बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य)**दाम्पत्य जीवन में 'काम' को महत्वपूर्ण हिस्सा बताते हुए 'डॉ. सरिता बहुखंडी' लिखती हैं, "सुखी व स्वस्थ दाम्पत्य जीवन की पहली शर्त है कामतुष्टि। इसके अभाव में मनुष्य मानसिक रूप से अस्थिर और रुग्ण बन जाता है। कामेच्छा मनुष्य की शारीरिक व व्यक्तिगत आवश्यकता है। इसमें मानवजाति की रक्षा व सृजनात्मकता का भाव भी निहित है।"[10] **(बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य)**

'मित्रो' परंपरागत आदर्शों से हट के है, वे मानती है कि परंपरागत आदर्शों से जीवन सफल नहीं हो सकता इससे और अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है इसीलिए वह निर्भीक होकर पुरुष समाज के सामने आकर खड़ी होती है। वह घर से बाहर निकलने, पैसा कमाने तक ही नहीं बल्कि काम सम्बन्धों के लिए भी समान अधिकार की मांग करती है। स्वयं 'मित्रो' कहती है "अब तुम ही बताओ जेठानी तुम जैसा सतबल कहाँ से लाऊँ-पाऊँ? देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता। बहुत हुआ हफ्ते-पखवारे और मेरी इस देह में इतनी प्यास है कि मछली सी तड़पती हूँ।"[11] उपन्यास में 'मित्रो' के जेठ 'बनवारीलाल' को दोहरे विवाह करते हुए दिखाया गया है लेकिन 'मित्रो' अपनी खुशी के लिए दूसरे के संपर्क में जाना चाहती है तो वह कटघरे में खड़ी कर दी जाती है 'बनवारीलाल' कहता है, "बरखुरदार, मैंने भी एक नहीं, दो-दो ब्याही हैं पर कभी ऐसी नौबत नहीं आई। तेरी ही घरवाली आए दिन क्यों बिफरती है ?"[12] यहाँ हम देख सकते हैं कि पुरुष का सोच किस प्रकार का है वह चाहे तो कुछ भी कर सकता

है पर स्त्री नहीं। 'मित्रो' को दोषी के नजर से देखा जाता है उससे पूछा जाता है कि क्या यह सच है कि किसी से संबंध बनाने की कोशिश की है तो वह बड़ी ही निडर होकर अपनी भावनाओं को अपने ही अंदर रखती हुई कहती है "सच तो यूँ, जेठ जी, कि दिन दुनिया बिसरा मैं मनुक्ख कि जात से हँस-खेल लेती हूँ। झूठ यूँ कि खसम का दिया राजपाट छोड़े मैं कोठे पर तो नहीं जा बैठी ?"[13] 'मित्रो' की सास 'धनवंती' अपने बड़े बेटे बनवारीलाल से भी पूछती है कि बेटा भाई तुम्हारा संग सेहत में तो पूरा है ना? पर कहते हैं न पुरुष हमेशा स्त्री को अपने से नीचा ही रखना चाहता है उसी प्रकार 'बनवारी', भाई के कमी को जानते हुए भी बिना आँख मिलाए अपनी माँ से कहता है, "सरदारी में कोई दोष नहीं, अम्मा ! यह जरनैली नार छोटे-मोटे मर्द के बस नहीं।"[14]

अंततः 'मित्रो' के द्वारा 'सोबती' हमारे समाज में प्रचलित मान्यताओं का विरोध करती हुई कहलवाती हैं, "जींद जान का यह कैसा व्यापार ? अपने लड़के बीज डाले तो पुण्य, दूजे डाले तो कुकर्म।"[15] तो वहीं एक तरफ नारी के शील स्वभाव को भी दर्शाती है जहाँ पति द्वारा उपेक्षित किए जाने पर भी 'मित्रो' एक पत्नी के सारे कर्तव्यों को निभाने से नहीं कतराती। पति 'सरदारीलाल' को परेशान देख वह कहती है, "महाराज जी न थाली बाँटते हो न नींद बाँटते हो, दिल के दुखड़े ही बाँट लो।"[16]

'डॉ. गिरिधर प्रकाश शर्मा' के शब्दों में "कृष्णा सोबती ने मित्रो मरजानी उपन्यास में सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक संस्था में आस्था न रखने वाली युवती की महत्वाकांक्षाओं को यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया है। लेखिका ने मित्रो की काम-कुंठा, काम-अतृप्ति और उससे उभर आनेवाले काम तृप्ति के प्रयत्नों का कलात्मकता से वर्णन किया है।"[17]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अपने वजूद, अपने हक के लिए लड़नेवाली स्त्री का चित्रण करना ही 'सोबती' के इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य है। उनके पात्रों को न ही समाज की परवाह है और न ही उसके बारे में सोचने का समय वह तो बस पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का हक माँगती है। प्राचीन परंपरा से हटकर नारी को देह

स्वतंत्रता की मांग करवाना काफी चुनौतीपूर्ण कार्य है जिसे सोबती ने इस उपन्यास के माध्यम से सहज रूप में व्यक्त किया। यहाँ प्रमुख निष्कर्ष 'मित्रो' के द्वारा पूरे समाज एवं पुरुष वर्ग से सोबती का ज्वलंत प्रश्न कराना है कि क्या स्त्री में कोई कमी होती तो पुरुष दूसरी स्त्री की चाह में घर से बाहर नहीं निकलता ? क्या कोई पुरुष संतान प्राप्ति के लिए दूसरा विवाह नहीं करता ? कोई तो कानून होगा जो स्त्री के लिए भी बना होगा ? एक ही तरह के मनुष्य होने के बावजूद भी उसके साथ अलग तरह का व्यवहार और अलग नियम क्यों बनाए जाते हैं। इन सभी प्रश्नों के उत्तर सोबती 'मित्रो' द्वारा समाज से मांगती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

[1] बासमेह डॉ. शहनाज जाफ़र,कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ,पृ.230.

[2] राठोड डॉ. शंकर ए., कृष्णा सोबती:व्यक्तित्व एवं कृतित्व,पृ.124.

[3] बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य,पृ.134.

[4] बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ कृष्णा सोबती का साहित्य,पृ.19.

[5] वहीं,पृ.10.

[6] वहीं,पृ.18.

[7] वहीं,पृ.32.

[8] वहीं,पृ.22.

[9] वहीं,पृ.19.

[10] बहुखंडी डॉ. सरिता,आदर्श नहीं यथार्थ:कृष्णा सोबती का साहित्य,पृ.129.

[11] सोबती कृष्णा,मित्रो मरजानी पृ.20.

[12] वहीं,पृ.14.

[13] वहीं,पृ.36.

[14] वहीं,पृ.72.

[15] वहीं,पृ.64.

[16] वहीं,पृ.48.

[17] बासमेह डॉ. शहेनाज जाफ़र,कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएँ,पृ.198.